[A-15] Seat No. : _____ No. of printed pages : 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M.A. Previous (External) Examination
Tuesday, 17th April 2018
10.00 am - 1.00 pm
HIN-402 : आधुनिक हिन्दी काव्य : Paper-II

Total Marks : 100

प्र.१ 'साकेत' के 'नवम् सर्ग' में निरूपित ऊर्मिला के विरह को सोदाहरण समझाइए । (२०)

अथवा

प्र.१ 'कामायनी' के 'श्रद्धा' सर्ग का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें ।

प्र.२ निराला की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । (२०)

अथवा

प्र.२ सुमित्रानंदन पंत की पठित कविताओं के काव्य सौन्दर्य को समझाइए ।

प्र.३ नागार्जुन की कविताओं में निरूपित सामाजिक यथार्थ की उदाहरण सहित चर्चा करें । (२०)

अथवा

प्र.३ भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से मुक्तिबोध के 'अँधेरे में' काव्य की समीक्षा कीजिए ।

प्र.४ टिप्पणी लिखें : **(किन्हीं दो)** (२०)

(१) 'साकेत' काव्य की भाषा
(२) छायावादी काव्य में महादेवी वर्मा का स्थान
(३) अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध तथा हरिवंशराय बच्चन की रचनाएँ
(४) नागार्जुन तथा धूमिल का कृतित्व

प्र.५ ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए (२०)

(क) चिन्ता करता हूँ मैं जितनी उस अतीत की, उस सुख की;
उतनी ही अनंत में बनती जातीं रेखाएँ दुख की ।
आह सर्ग के अग्रदूत! तुम असफल हुए, विलीन हुए ।
भक्षक या रक्षक, जो समझो, केवल अपने मीन हुए ।

अथवा

(क) पूछी थी सुकाल-दशा मैंने आज देवर से-
कैसी हुई उपज कपास, ईख, धान की?
बोले - ''इस बार देवि, देखने में भूमि पर,
दुगुनी दया-सी हुई इन्द्र भगवान की।''
पूछा यही मैंने एक ग्राम से तो कृषकों ने,
अन्न, गुड़, गोरस की वृद्धि ही बखान की,
किन्तु ''स्वाद कैसा है, न जाने, इस वर्ष हाय!''
यह कह रोई एक अबला किसान की!

(ख) कहाँ गया धनपति कुबेर वह
कहाँ गई उसकी वह अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम-प्रवाही गंगाजल का,
ढूँढा बहुत परंतु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए वह छायामय
बरस पड़ा होगा न यहीं पर,
जाने दो, वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,

अथवा

(ख) दो बाँहों से दूरस्थ तीर, धारा का कृश कोमल शरीर,
आलिंगन करने को अधीर !
अति दूर क्षितिज पर विटप माल, लगती भ्रू-रेखा सी अराल
अपलक नभ नील नयन विशाल!
माँ के उर पर शिशु-सा, समीप, सोया धारा में एक द्वीप,
ऊर्मिल प्रवाह को कर प्रतीप;
वह कौन विहग? क्या विकल कोक उड़ता, हरने निज विरह-शोक
छाया की कोकी को विलोक!

---------- X ----------